Impact Factor: 5.731

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Volume 4, Issue 3, March 2024

महादेवी के साहित्य में विरह वेदना का चित्रण

डॉ. प्रतिभा सिंह

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

शहीद केदारनाथ राजकीय महाविद्यालय, मऊगंज, मध्य प्रदेश

kupratibhasingh@gmail.com

शोध सार- महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की एक प्रमुख कवयित्री हैं, जिनके काव्य में विरह वेदना का एक विशेष स्थान है। उनके काव्य में विरह का दर्द केवल प्रेमी से बिछड़ने का नहीं, बल्कि आत्मा की गहन तड़प और आत्मसाक्षात्कार का प्रतीक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति का उपयोग भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया है, जिसमें चंद्रमा, बादल, और रात जैसे प्रतीक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी रचनाओं में विरह वेदना एक स्त्री के आत्मसम्मान, उसकी स्वतंत्रता, और उसकी आंतरिक संघर्ष की अभिव्यक्ति है। महादेवी का काव्य विरह वेदना के माध्यम से सामाजिक बाधाओं और आध्यात्मिकता के बीच की गहराइयों को छूता है, जिससे पाठकों को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की दिशा में प्रेरणा मिलती है। उनका काव्य न केवल व्यक्तिगत अनुभवों को दर्शाता है, बल्कि एक व्यापक और सार्वभौमिक सत्य को भी उजागर करता है, जो हिंदी साहित्य में विरह वेदना की समझ को एक नई ऊँचाई प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: आत्मा की तड़प, आध्यात्मिकता, स्त्री की स्थिति

परिचय

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की एक प्रमुख कवयित्री मानी जाती हैं, जिनकी काव्य रचनाओं में स्त्री की आत्मा की गहराइयों को अभिव्यक्त करने की अद्वितीय क्षमता है। उनका काव्य, विशेष रूप से 'विरह वेदना' के संदर्भ में, भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना का वर्णन उनके गहन व्यक्तिगत अनुभवों और समाज में स्त्री की संवेदनाओं को प्रतिबिंबित करता है। उनके काव्य में विरह का दर्द केवल प्रेम की अनुपस्थिति का नहीं, बल्कि आत्मा की खोज और आत्मसाक्षात्कार का प्रतीक भी है।

महादेवी का काव्य विरह वेदना के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करता है, जिसमें प्रेम, आध्यात्मिकता, और सामाजिक बाधाओं के कारण उत्पन्न होने वाले दुख शामिल हैं। उनकी कविताओं में विरह का अनुभव एक

व्यापक और गहन दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो पाठकों को अपनी भावनाओं के साथ जुड़ने और उनके अनुभवों में डूबने के लिए प्रेरित करता है। महादेवी वर्मा की काव्य रचनाओं में विरह की वेदना को अभिव्यक्त करने का तरीका अद्वितीय है, क्योंकि वे अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

महादेवी वर्मा की रचनाओं में विरह वेदना के कई पहलू देखने को मिलते हैं, जैसे कि प्रेमी से बिछड़ने का दर्द, प्रिय के बिना जीवन की निरर्थकता, और आत्मा की तड़प। उनकी कविताओं में यह विरह वेदना कभी-कभी प्रतीकात्मक होती है, जो आध्यात्मिक यात्रा और आत्मा की उच्चता की ओर इंगित करती है। महादेवी वर्मा की काव्य रचनाएँ भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ी हुई हैं, जो उनकी विरह वेदना को और भी गहन और प्रभावी बनाती हैं।

महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति के माध्यम से विरह वेदना को व्यक्त करने का एक खास अंदाज है। वे प्रकृति के विभिन्न तत्वों, जैसे कि चंद्रमा, बादल, और रात, का उपयोग अपने भावनात्मक अनुभवों को व्यक्त करने के लिए करती हैं। उनकी कविताओं में इन तत्वों का प्रयोग एक गहरे भावनात्मक और प्रतीकात्मक स्तर पर किया गया है, जो उनकी विरह वेदना को और भी सजीव और सजीव बनाता है। महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति और विरह का यह मेल पाठकों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है, जिसमें वे स्वयं को कवि की संवेदनाओं के साथ जोड़ सकते हैं।

महादेवी वर्मा का काव्य विरह वेदना के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करता है, बल्कि यह समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी भावनाओं को भी उजागर करता है। उनकी कविताओं में विरह की वेदना एक स्त्री के आत्मसम्मान, उसकी स्वतंत्रता, और उसकी आत्मा की स्वतंत्रता की खोज का प्रतीक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में यह वेदना एक स्त्री की आंतरिक संघर्ष और उसकी सामाजिक बाधाओं के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है। उनकी कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से एक स्त्री के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की खोज को अभिव्यक्त किया गया है, जो भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति के प्रति एक गहन दृष्टिकोण प्रदान करता है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना का वर्णन केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि एक दार्शनिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी किया गया है। उनकी कविताओं में विरह का दर्द आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार का प्रतीक है। महादेवी वर्मा का काव्य विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की गहराइयों को छूता है और पाठकों को आत्मा की उच्चता की ओर प्रेरित करता है। उनकी कविताओं में विरह

वेदना के माध्यम से आत्मा की तड़प और उसकी उच्चता की खोज को अभिव्यक्त किया गया है, जो पाठकों को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना का यह गहरा और व्यापक दृष्टिकोण भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी कविताओं में विरह का वर्णन केवल व्यक्तिगत अनुभवों का ही नहीं, बल्कि एक व्यापक और सार्वभौमिक सत्य का प्रतीक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार का यह गहरा दृष्टिकोण पाठकों को उनकी कविताओं में डूबने और उनके अनुभवों को अपने अनुभवों के साथ जोड़ने के लिए प्रेरित करता है।

महादेवी वर्मा की काव्य रचनाएँ विरह वेदना के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें प्रेम, आध्यात्मिकता, और सामाजिक बाधाओं के कारण उत्पन्न होने वाले दुख शामिल हैं। उनकी कविताओं में यह विरह वेदना एक गहन और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो पाठकों को आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करती है। महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की तड़प और उसकी उच्चता की खोज को अभिव्यक्त किया गया है, जो पाठकों को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है।

महादेवी वर्मा का काव्य विरह वेदना के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करता है, बल्कि यह समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी भावनाओं को भी उजागर करता है। उनकी कविताओं में विरह की वेदना एक स्त्री के आत्मसम्मान, उसकी स्वतंत्रता, और उसकी आत्मा की स्वतंत्रता की खोज का प्रतीक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में यह वेदना एक स्त्री की आंतरिक संघर्ष और उसकी सामाजिक बाधाओं के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है। उनकी कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से एक स्त्री के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की खोज को अभिव्यक्त किया गया है, जो भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति के प्रति एक गहन दृष्टिकोण प्रदान करता है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना का वर्णन केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि एक दार्शनिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी किया गया है। उनकी कविताओं में विरह का दर्द आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार का प्रतीक है। महादेवी वर्मा का काव्य विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की गहराइयों को छूता है और पाठकों को आत्मा की उच्चता की ओर प्रेरित करता है। उनकी कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की तड़प और उसकी उच्चता की खोज को अभिव्यकृत किया गया है, जो पाठकों को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना का यह गहरा और व्यापक दृष्टिकोण भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी कविताओं में विरह का वर्णन केवल व्यक्तिगत अनुभवों का ही नहीं, बल्कि एक व्यापक और सार्वभौमिक सत्य का प्रतीक है। महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार का यह गहरा दृष्टिकोण पाठकों को उनकी कविताओं में डूबने और उनके अनुभवों को अपने अनुभवों के साथ जोड़ने के लिए प्रेरित करता है।

महादेवी वर्मा की काव्य रचनाएँ विरह वेदना के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें प्रेम, आध्यात्मिकता, और सामाजिक बाधाओं के कारण उत्पन्न होने वाले दुख शामिल हैं। उनकी कविताओं में यह विरह वेदना एक गहन और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो पाठकों को आत्मा की उच्चता की खोज और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करती है। महादेवी वर्मा की कविताओं में विरह वेदना के माध्यम से आत्मा की तड़प और उसकी उच्चता की खोज को अभिव्यक्त किया गया है, जो पाठकों को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है।

विरह का अर्थ है, वियोग और वेदना का अर्थ है, मानसिक या मन की पौड़ा। इस प्रकार विरह वेदना का अर्थ हुआ वियोग से उत्पन्न मन की पीड़ा। हिन्दी काव्य में विरह भावना को अभिव्यक्त करने वाली कवयित्रियों में महादेवी जी का प्रमुख स्थान है। महादेवी के अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के बिद्रोह को विरह वेदना के रूप में अभिव्यक्त किया है। विरह के ताप को सहकर भी वे उससे उबरना नहीं चाहती है। वे नही चाहती कि उनकी पीड़ा कभी समाप्त हो, उनकी पीड़ा को कोई करुणा, सहानुभूति या सुख से भर दे। सम्पूर्ण साहित्य में उनकी पौड़ा की समानता करने वाला कोई नहीं है। उन्हें पीड़ा की रानी कहा जाता है। नंद दुलारे वाजपेयी ने महादेवी की वेदना के बारे में लिखा कि "प्रसाद के आंसू, निराला की स्मृति जैसी उद्द्घात और एक तान कल्पना तथा पल्लव का सा सौन्दर्योन्मेव महादेवी जी में नहीं है किन्तु वेदना का विन्यास, उसकी वस्तुमता का बहुरूप और विवरणपूर्ण चित्रण जितना महादेवी जी ने दिया है, उतना वे तीनो कवि नहीं दे सके हैं।

महादेवी के काव्य में भावोदेरक की नैसर्गिकता के कारण वेदना भाव अकृत्रिम रूप में अभिव्यक्त किया हुआ है। उनका विरह बाहय आडम्बरों से मुक्त है। इसमें छल कपट, बड़बोलापन और हाहाकार नहीं है।

महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। विरह रूपी संगीत महादेवी की आत्मा को झंकृत करता है तथा वेदना इनके जीवन के प्रकाशमान करती है। विरह की सात्विकला महादेवी की कविताओं में विश्व वेदना बन जाती है। उनके प्रथम काव्य संग्रह नीहार के एक गीत में विरह जन्य व्याकुलता के साथ संयोग की इच्छा भी छिपी हुई है।

"जो तम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने सदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाला प्राणी का तार-तार अनुराग मरा उन्माद राम,
छा जाता जीवन में बसन्त जुट जाता चिर संचित विराग
आधे देती सर्वस्वकार।"

उनकी पौड़ा इदय की शांत और गभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण सहादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है। महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है। उनकी कविताओं में नौर भरी दुख की बदली विरह वेदना का नाम ले, मैं विरह में चिरलीन हूँ, मैं अपने सुनेपन की रानी हूं मतवाली, तुमको पीडा में ढूंढा आदि में उन्होने वेदना, करुणा, विरह तथा दुख को अभिव्यक्त किया है। कवयित्री ने सदैव परमार्थ व परहित को महत्व दिया। वे दूसरे के दुखों में स्वंय दुखी हो उठती है। वे सदैव मानव कल्याण की कामना करती हुई दिखाई देती है। महादेवी जी को करुणा की कववित्री कहा जाता है। अपने करुणा और विरह वेदना सम्बन्धी दृष्टिकोण को लेकर उन्होंने अपने काव्य संकलन में संवय से ही प्रश्न किया है, 'सख दख के धूप उयही डोरे से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुख ही क्यों इतना प्रिय है

महादेवी जी को विरहानुभूति में आध्यात्मिकता का भाव विधमान है। जीवन भर विवाद के गीत गाने वाली महादेवी कल्पना करती है कि इस जीवन के मध्याकाल के समय लम्बी यात्रा करने के बाद जब जीवन अपने ही भार से दब जाएगा और कालर कटन करने लगेगा तब विश्व के सभी कोनी से एका अजात सुख की वर्षा होगी। उनकी यही कल्पना और कामना उनकी वेदना को आध्यात्मिकता से जोड़ती है। वे अपनी आध्यात्मिकता को इस लोक जीवन से जोजे रखना चाहती है। मैं फूली में रोती वे बालक में मुस्कान में पथ में बिछ जाती व सौरभ में उठ जाते. जैसी पक्तियों में उनकी लौकिक तथा
अलौकिक वेदना का चित्रण हुआ है।

महादेवी वर्मा ने अपने व्यक्तिगत सुख दुःख को समष्टि में लीन करने का प्रयास किया है। उनमें गीतों में व्यक्तिगत सुख- दुःख, वेदना और आशा-निराशा, समष्टि के सुख दुःख, वेदना और आशा-निराशा बन कर सामने आते हैं। ऐसा लगता है मानो वे अपने दुःख का समाजीकरण कर रही हो।

"सब बुझे दीपक जला लूं।
पिर रहा तम आज, दीपक रागिनी अपनी जला लूं।'

महादेवी के गौली में विरह की सात्विकता पाई जाती है। उनकी वेदना का आधार नारी का कोमल हृदय है। उनकी यही सात्विकता उनकी कविताओं में आवुकता, स्निग्धता, भावोदकयुक्त प्रतीक्षा और लोक मंगल की भावना के साथ दिखाई देती है।

उन्होने हरिऔध की राधा की भांति अत्यन्त सहजता से वैयक्तिक पीड़ा को विश्व पीड़ा में लीन कर दिया। समाज के दलित, उपेक्षित वर्ग के प्रति उनकी करुणा और सेवा-भावना उनके वेदना का दूसरा पहलू प्रस्तुत करती है।

महादेवी के काव्य में जो विरह वेदना हमें देखने को मिलती है। वह उनकी अश्रुधारा बनकर सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करती है। वे एक जगह संवय को "मैं नीर भरी दुख की बदली कहती है। महादेवी जी के काव्य में जो विरह दिखाई देता है, वह अपने प्रियतम से मिलने की आतुरता के कारण है। 'नीहार" महादेवी के किषोर जीवन की वह रचना है, जिसमें उसका मन प्रणय और पीड़ा के वषीभूत हो रहा था। कवयित्री का मन एक ऐसा अनोखा संसार बसाना चाहता है जहां वेदना की मधुर धारा बह रही हो।

"चाहता है यह पागल प्यार।
अनोखा एक नया संसार।।
कलियों के उच्छवास शून्य में ताने एक वितान
तुहिन कर्णा पर मृदु कम्पन में सेज बिरादे गान।।'

महादेवी की रचनाओं में विरह और वेदना की प्रबलता के कारण 'एकान्त' का भाव भी देखा जा सकता है। 'अपने इस सूनेपन की मैं हूं रानी मतवाली, प्राणों का दीपक जलाकर, करती रहती दीवाली। कवयित्री अपने प्रियतम को पाने के लिए बार-बार प्रयत्न करती और विफलता का अनुभव करती है। अपने प्रियतम को पाने के लिए उसके प्राणों में एक आकांक्षा मचल उठती है तथा उसकी व्याकुलता बढ़ जाती है।

"अली कैसे उनको पाऊं?
वे आंसू बन कर मेरे
इस कारण दुल-दुल जाते
इन पलकों के बंधन में
मैं बांध बांध पछताऊं। '

महादेवी के काव्य में दुःखवाद को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। कुछ लोगों ने उनकी पीड़ा को 'अरोपित' पीड़ा कहा है। लेकिन उनकी कविताओं को देखकर उनकी पीडा सहन प्रतीत होती है। वे अपने दुःख को प्रकट करते हुए कहती है

वेदना में जन्म करुणा में किया आवास
अश्रु चूमता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।
आंसूओ का कोष उर, द्दग अश्रु की टकसाल,
तरल जब काण से बने घन सा क्षणिक मृदुगात।

महादेवी के काव्य में एक ओर विरह वेदना है तो दूसरी ओर आशामय जीवन है। वे दुःख में भी सुख को देखती है तथा अपने प्रिय का स्मरण करते हुए खिल उठती है।

"नैनों में आंसू है,
और हृदय में सिहरन है,
पुलक-पुलक उर सिहर-सिहर तन,
आज नयन आते क्यों भर-भर।"

इस आनन्द का कारण यह है कि कवयित्री अपने प्रिय के प्रेम से भरी हुई है। अपने प्रिय तक संदेश पंहुचाने के लिए कवयित्री छटपटाने लगती है।

"कैसे संदेश प्रिय पहुंचाली ?
हरा जल की सिल मति है अक्षरा
नसि प्याली झरते तारक इय।

महादेवी के काव्य में मिलने वाले दुःखवाद को देखते हुए कुछ विद्वान मानते हैं कि उनके काव्य में क्रन्दन और स्दन के दर्षन होते हैं।

'महादेवी के गीतों में क्रन्दन और रुदन का रूप देखा जाता है, उसके पीछे भी समाज का बंधन छिपा हुआ है। जीवन के सुख एव स्वप्नों के टूट जाने के कारण दुख एंव रुदन के प्रति इतना लगाव देखा जाता है।

विरह की लम्बी साधना के बाद प्रिय का साक्षात्कार सृष्टि में व्याप्त करुणा में ही होता है। कवयित्री को विरह वेदना से मिलने का सुख प्राप्त हुआ है। वेदना के पश्चात अंत में उसकी परिणति आंनद में होती है।

महादेवी की सांध्यगीत रचना में चिंतन प्रधान अनुभूतियां विधमान है जो कवयित्री की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने में सक्षम है। महादेवी ने स्वंय स्पष्ट किया है कि "नीरजा और सांध्यगीत मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेंगे जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दुःख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
IJETIR
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 3, March 2024

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख-दुःख, हास्य- रुदन, हर्ष-शोक तथा आनंद और करुणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय सुख दुखात्मक अनुभूतियों से भरा है। जब ये अनुभूतियां विचलित और उद्वेलित करने लगती है तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पड़ते हैं। महादेवी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पौड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करुणा, सात्विकता, भावोदेरक, आषावादी दृष्टिकोण आदि समलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी जी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके आस पास तक नहीं फटकता। छायावादी युग में एक मात्र ऐसी भाव- यौवना कवयित्री है जिन्होंने नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुध्दि की कसौटी पर कसा, खरे उत्तरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढाल कर निर्भिकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती है तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व मुख मैं घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। उनकी विरहानुभूति को देखकर उन्हें आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

संदर्भ-

1. यामा की भूमिका, महादेवी वर्मा, पृ.-3
2. छायावादी कवियों की गीत सृष्टि, डॉ. उपेन्दर, पृण- 213
3. यम, महादेवी वर्मा, पृ. 63-63
4. दीपशिखा, महादेवी वर्मा, पृ
5. यम, संध्या गीत, पृष्ठ-239
6. यम, रश्मी, पृ.-75
7. यामा, महादेवी, पृ.-123
8. वही पृ.-123
9. वही प.-146

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 3, March 2024
Impact Factor: 5.731

10. महादेवी वर्मा की काव्य अनुभूति, डॉ. रेणू दीक्षित, पृ.- 10 66

11. यम, महादेवी, पृष्ठ-6